संदेश छ:

एक सामूहिक योद्धा के रूप में दुल्हन

पवित्रशास्त्र पठन: इफ. 6:10-20

I. इफिसियों 6:10 प्रकट करता है कि दुल्हन एक सामूहिक योद्धा है जो परमेश्वर के राज्य के लिए परमेश्वर के शत्रु के खिलाफ लड़ रही है:

A. जब मसीह के जयवन्त होते मसीह की प्रेमिका परमेश्वर का निवास स्थान बनने के लिए परमेश्वर के साथ एक होती है, परमेश्वर की नजरों में वह तिरसा के समान सुंदर और यरूशलेम के समान मनोहर; हालाँकि, शत्रु के लिए पताका फहराती हुई सेना के समान विस्मयकारी है—श्रेष्ठ. 6:4:

1. पताका लड़ने के लिए एक तैयारी को प्ररूपित करता है और एक चिह्न भी है कि विजय को जीत लिया गया है; एक विस्मयकारी सेना प्ररूपित करती है कि प्रभु के जयवन्त परमेश्वर के शत्रु, शैतान को भयभीत करते हैं।
2. सेना परमेश्वर के लोगों की पदावनति में जयवन्त बनने के लिए परमेश्वर के राज्य के लिए युद्ध लड़ते हैं जो प्रभु की बुलाहट का उत्तर देते हैं (प्रक. 2:7, 11, 17, 26; 3:5, 12, 21); अंतत:, जयवन्त सामूहिक रूप से मसीह से विवाह करने के लिए एक दुल्हन बन जाएंगे (19:7-9); अपने विवाह के बाद, यह दुल्हन मसीह, अपने पति के साथ साथ मसीह-विरोधी को उसके सभी अनुसरणकर्ताओं के साथ पराजित करने के लिए युद्ध लड़ने हेतु एक सेना बन जाएगी (आआ. 11-21)।

B. दुल्हन के रूप में कलीसिया परमेश्वर के इरादे में वास्तव में सामूहिक मनुष्य है, जो परमेश्वर को अभिव्यक्त करने और परमेश्वर के शत्रु के साथ निपटारा करने के दोहरे उद्देश्य को पूरा करेगा—उत. 1:26।

C. न केवल मसीह के अनंत उद्देश्य को पूरा किया जाना जरूरी है और मसीह के हृदय की चाह को संतुष्ट किया जाना जरूरी है, बल्कि परमेश्वर के शत्रु को पराजित किया जाना भी जरूरी है; इसके लिए, कलीसिया को एक योद्धा होना जरूरी है।

D. हमारी चाल परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिए है, हमारा जीना मसीह की संतुष्टि के लिए है, और हमारा युद्ध परमेश्वर के शत्रु को पराजित करने के लिए है—इफ. 4:1; 5:2, 8; 6:10-11।

II. सहस्राब्दी के दौरान दौरान यीशु की साक्षी मसीह की दुल्हन है—वे जयवन्त जो मसीह के सह-राजा हैं—प्रक. 19:7-9; 20:4, 6:

A. प्रभु की पुन:प्राप्ति मसीह की दुल्हन की तैयारी के लिए है (19:7-9; 21:2); अंतत:, हम अद्भुत शूलम्मिन के अनुरूप बनाए जाएंगे, जो, सुलेमान की प्रतिलिपि के रूप में, मसीह की अर्धांगिनी, दुल्हन के रूप में नए यरूशलेम का महानतम और परम नमूना है (श्रेष्ठ. 6:13; प्रक. 21;2, 9-10; 22:17अ)।

B. शूलेम्मिन की तुलना परमेश्वर की दृष्टि में दो छावनियों, या दो सेनाओं (इब्रानी *महानैम*) के नृत्य से की गई है; याकूब ने परमेश्वर के स्वर्गदूतों, परमेश्वर की दो सेनाओं को देखने के बाद, उस स्थान का नाम महानैम रखा और अपनी पत्नियों, बच्चों और निज संपत्तियों को "दो सेनाओं" में विभाजित किया— श्रेष्ठ. 6:13; उत. 32:1-10:

1. दो सेनाओं का आत्मिक महत्व मजबूत गवाही है कि हम उसके माध्यम से विजयी से भी अधिक, हम "सर्वोच्च जयवन्त," होते हैं जो हमें मसीह की देह के सिद्धांत के अनुसार हमसे प्रेम किया—रो. 8:37; 12:5; व्य. 32:30; सभ. 4:9-12।
2. परमेश्वर उनको नहीं चाहता है जो अपने आपमें बलवान हैं; वह केवल निर्बल जनों को चाहता है, कमजोर जनों को, स्त्रियों और बच्चों को; वे जो जयवन्त होने योग्य गिने गए हैं वे कमजोर जन होंगे जो प्रभु पर निर्भर रहते हैं—1 कुर. 1:26-28; 2 कुर. 12:9-10; 13:3-5; श्रेष्ठ. 8:6।
3. परमेश्वर को एक ऐसे लोगों की जरूरत है जो उसके साथ एक हों, वे लोग जो उसके प्रति अधीन हों, जिसे गूँथे हुए बालों के द्वारा प्ररूपित किया गया है (1:11), और एक लचीली इच्छा के साथ उसके प्रति आज्ञाकारी हों, जिसे गले और आभूषणों की कतार के द्वारा प्ररूपित किया गया है (आ. 10)।
4. जब हम विचार करते हैं कि दिव्य प्रकाशन के उच्चतम शिखर तक कैसे पहुंचें, तो हमें अपने आप में नहीं बल्कि प्रेम, शक्ति, और दया के रूप में प्रभु पर निर्भर रहना होगा जो हमें दया, आदर, और महिमा का पात्र बनाता है—रो. 9:16, 21-23।

III. आत्मिक युद्ध आवश्यक है क्योंकि शैतान की इच्छा परमेश्वर की इच्छा के साथ विरोध में है—इफ. 1:5, 9, 11; मत. 6:10:

A. परमेश्वर का इरादा, परमेश्वर की इच्छा के अतिरिक्त, एक दूसरा इरादा, एक दूसरी इच्छा है, क्योंकि शैतान की इच्छा दिव्य इच्छा के विरूद्ध बनी है—यश. 14:12-14।

B. सारे युद्ध का स्रोत शैतान की इच्छा और परमेश्वर की इच्छा के बीच के विरोध में है।

C. आत्मिक युद्ध परमेश्वर के राज्य और शैतान के राज्य के बीच के विरोध का युद्ध है; स्वर्गों के राज्य को स्थापित किए जाने के लिए, आत्मिक लड़ाई की जरूरत है—मत. 12:26, 28; प्रक. 12:11.

D. हम सत्य के अनुसार और अनुग्रह के द्वारा चलते हैं, हम प्रेम और ज्योति में जीते हैं, और हम शैतानी इच्छा को वश में करने के लिए हैं—इफ. 4:1; 5:2, 8; 6:12।

IV. परमेश्वर के शत्रु से निपटने के लिए, हमें उस शक्ति की महानता से सशक्त होने की जरूरत है जिसने मसीह को मृतकों में से जिलाया और उसे स्वर्गीय स्थानों में बैठाया, आकाश की सभी दुष्ट आत्माओं से कहीं ऊपर—आ. 10; 1:19-22:

A. यह तथ्य कि हमें प्रभु में सशक्त होने की जरूरत है संकेत करता है कि अपने आप में हम शैतान और उसके दुष्ट राज्य के विरूद्ध आत्मिक युद्ध नहीं लड़ सकते हैं; हम केवल प्रभु में और उसके सामर्थ्य की शक्ति में ही लड़ सकते हैं।

B. सशक्त होने की आज्ञा हमारी इच्छा का अभ्यास करने की जरूरत को सूचित करती है, यदि हम आत्मिक युद्ध के लिए सशक्त होना चाहते हैं, तो हमारी अच्छा दृढ़ और अभ्यास की हुई होनी होगी—श्रेष्ठ. 4:4; 7:4।

V. कलीसिया और शैतान के बीच युद्ध हम जो प्रभु से प्रेम करते हैं और जो उसकी कलीसिया में हैं और स्वर्गीय स्थानों में दुष्ट शक्तियों के बीच युद्ध है—इफ. 6:12:

A. इस अंधकार के शासक, अधिकारी, और सांसारिक-शासक विद्रोही स्वर्गदूत हैं, जिन्होंने परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह में शैतान का अनुसरण किया और जो अब संसार के राष्ट्रों के ऊपर स्वर्गीय स्थानों में राज करते हैं—कुल. 1:13; दान. 10:20।

B. हमें एहसास करने की जरूरत है कि युद्ध मनुष्यों के विरूद्ध नहीं है बल्कि स्वर्गीय स्थानों की दुष्ट आत्माओं, आत्मिक शक्तियों के विरूद्ध है।

VI. आत्मिक युद्ध एक वैयक्तिक मामला नहीं है, यह मसीह की दुल्हन का एक सामूहिक योद्धा होने का मामला है—इफ. 6:13:

A. कलीसिया एक सामूहिक योद्धा है, और विश्वासी एक साथ इस सामूहिक योद्धा को बनाते हैं; जब हम सामूहिक रूप से एक सेना बनाए जाते हैं, तो हम परमेश्वर के शत्रु के विरूद्ध लड़ने में योग्य हो जाएंगे।

B. परमेश्वर की रणनीति कलीसिया को अपनी सेना के रूप में शत्रु के विरूद्ध लड़ने के लिए इस्तेमाल करना है; शैतान की रणनीति हमें कलीसिया से परमेश्वर की सेना के रूप में अलग-थलग करना है।

C. परमेश्वर का सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्र देह के लिए है, वैयक्तिकों के लिए नहीं; केवल सामूहिक योद्धा ही परमेश्वर का सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्र पहन सकता है।

VII. आत्मिक युद्ध लड़ने के लिए, हमें परमेश्वर के सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्र को पहनने की जरूरत है—आ. 11:

A. हमारे अस्तित्व में वास्तविकता के रूप में मसीह में परमेश्वर वो कमरबंध है जो हमारे सम्पूर्ण अस्तित्व को आत्मिक युद्ध के लिए बलवंत करता है—आ. 14अ।

B. धार्मिकता का सीनाबन्ध जो हमारे विवेक को ढकता है और हमें शैतान के आरोपों से बचाता है हमारी धार्मिकता के रूप में मसीह है—आ. 14ब; 1 कुर. 1:30।

C. मसीह हमारे लिए परमेश्वर के साथ और संतों के साथ एक होने के लिए शांति है; यह शांति वो दृढ़ नींव है जो हमें शत्रु के विरूद्ध खड़े होने के लिए सक्षम बनाती है—इफ. 2:15; 6:15।

D. विश्वास शैतान की जलती ज्वालाओं के विरूद्ध एक ढाल है; मसीह ऐसे विश्वास का रचियता और सिद्धकर्ता है—आ. 16; इब्र. 12:2।

E. उद्धार का टोप जो हमारे मन को ढकता है वो बचाने वाला मसीह है जिसे हम अपने दैनिक जीवन में अनुभव करते हैं—इफ. 6:17अ; यूह. 16:33।

F. आत्मा की तलवार, जो आत्मा परमेश्वर का वचन है, हमारा सुरक्षात्मक हथियार है जिससे हम शत्रु को टुकड़ों में काटते हैं—इफ. 6:17ब।

G. प्रार्थना अद्वितीय, अत्यंत महत्वपूर्ण, और जैविक माध्यम है जिसके द्वारा हम परमेश्वर के सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्र को लागू करते हैं, अस्त्र-शस्त्र की हर एक चीज को हमारे लिए एक व्यावहारिक रूप से उपलब्ध कराते हैं—आ. 18।

VIII. परमेश्वर का सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्र पहनने के द्वारा, हम दुष्ट की रणनीतियों, दुष्ट योजनाओं के विरूद्ध खड़े होने में योग्य होते हैं—आआ. 11, 13-14:

A. मसीह के साथ बैठना उसकी सब कार्यसिद्धियों में सहभागी होना है, परमेश्वर के अनंत उद्देश्य को पूरा करने के लिए उसकी देह में कार्य करना है, और परमेश्वर के शत्रु के विरूद्ध लड़ने के लिए उसकी शक्ति में खड़ा होना है—2:6; 4:1; 5:2, 8; 6:11, 13-14।

B. शत्रु के विरूद्ध लड़ने में, सबसे महत्वपूर्ण बात खड़े होना है; सब कुछ पूरा करके, हमें अंत तक खड़े रहने की जरूरत है।

IX. हम सबको देखने की जरूरत है कि आज प्रभु की पुन:प्राप्ति में हम एक युद्धक्षेत्र में हैं; हमें शैतान की स्वर्गीय सेनाओं के विरूद्ध लड़ने के लिए प्रभु के साथ सहयोग करना होगा ताकि हम मसीह की देह के निर्माण के लिए और मसीह की दुल्हन की तैयारी के लिए अधिक से अधिक मसीह को हासिल कर सकें, परमेश्वर के राज्य को स्थापित और फैला सकें ताकि मसीह पृथ्वी पर उत्तराधिकार करने के लिए वापस आ सके।